मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८

VOLUME I

मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८

The Rajput may well be proud of their ancient chivalry, for in no country in the world have we such a brave and glorious record, as is to be found in the description of those deeds of valour, which the Rajputs enacted in defence of their religious liberty and for the protection of their hearths and homes.

—Col. C. K. M. Walter.

राजपूतों का अपने प्राचीन शौर्य पर गर्व करना सर्वथा उचित ही है। क्योंकि अपने धर्म की स्वाधीनता तथा कुल-मर्यादा की रक्षा के लिये राजपूतों ने जो वीर-कार्य किये हैं तथा उनमें जैसे वीरत्व और गौरव का परिचय हमें दिया है वैसा विश्व के किसी भी अन्य देश के इतिहास में हमें नहीं मिलता।

—कर्नल वाल्टर

संस्कृत पुस्तकों, फारसी तवारीखों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, सिक्कों
और ख्यातों आदि के आधार पर प्राचीन समय से
वर्तमान काल तक का समस्त राजपूताना
प्रान्त का सचित्र इतिहास

मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८

लखक
श्री जगदीशसिंह गहलोत एम० आर० ए० एस०
एन्टिक्वेरियन एराड हिस्टोरियन
जोधपुर (राजपूताना)

प्रस्तावना लेखक
रावबहादुर के० एन० दीक्षित एम० ए०, एफ० आर० ए० एस० बी०,
डाईरेक्टर जनरल आफ आर्किओलॉजी इन इण्डिया
नई देहली

भाग ८

(राजपूताना का वृत्तांत और उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़,



रावबहादुर श्री के० एन० दीक्षित एम० ए०,
डाईरेक्टर जनरल आफ आर्कआलाजी
टू दी गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया,
नई देहली

महाराजा जसवन्ति6ह प्रथम ने यहाँ पर बाहर से मंगवा कर अनेक पेड़ लगवाये थे।वर्तमान में शोतला माता का मेला यहां लगता है तथा कई सामंतों की छतरियें बनी हुई हैं ।किंवर्दती है कि यहाँ किसी समय काकभुषंड ऋषि ने तपस्या की थी ।

चहूजी सेखावत रो तब्ठाव (१८६/ २४६)--यह तालाब महाराजा जसवन्तर्तिहजी (प्रथम) की रानी अंतरंगदेजी (खंडेला की) ने बनवाया ।'

यहूजी सरूपदे रो तव्ठाव (१८८/ २४६)-यह तालाब मालदे की भालीरानी सरूपदे ने संवत् १५९७ में बनवाया | नाम स्वरूपसागर है ।

राईको हाडोजी रो बाग (१८६/ २४६)--यह बाग महाराजा जसवरन्तापिह (प्रथम) की हाडी रानी जसरंगदे ने संवत् १७३० में लगवाया । पहले इस स्थान को रातानाडा कहते थे ।

सुर सागर (१८५६/२४६)--यह स्थान महाराजा सूरसिह ने संवत् १६६४ में भाटी गोयंददास की देखरेख में बनवाया ।८ वर्ष में कार्य पूरा हुआ ।पास ही अनेक सामंतों ने भी छोटे-बड़े वाग बनवाये ॥
बालसमंद (१८६/२४६)--इसे नाहड़ाराव पडिहार के भाई बालाराब ने बंधवाया था ।यह बाँध मंडोर के पास है ।

१. द्रष्ठव्य--इसो ग्रंथ का परिशिष्ट (ख) पृष्ठ भ८३ २. है 83 ३३]
श्णर डर 8 8 $ है b0 है शैफर है
8 हि ११ 8! 28. हफरे

श्ष] ; मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८
डॉंगिया वात (२१६/२५०)--बीकाकेस्से आकर डांगा शाखा के जाट यहां वसे जिससे इसका यह नाम पड़ा ।
शंमपुरो बिसादण बास ६ (२२५/२५०)-यह गाँव रांम कुभावत भाटी के द्वारा बसाया गया था ॥
तिबरों (२३६/२५०)--यहाँ पर संवत् १५२२ में सस्थापित पा श्वेनाथजी का मन्दिर है।
चावंडवा (२२७/२५२)--यहां पहाड़ी पर चामुण्डा का प्राचीन मन्दिर है ।यहां राव चु डा ने चामुण्डा की तपस्या को थी |
बीदू मेहा (२४२/२५२)--इस कवि का लिखा हुआ “पावूजो दा छद” डिगल का उत्तम काव्य है ।
पीपाड (२४४/२५३)--यहाँ का पीपलाद माता का मन्दिर, एक कुण्ड तथा € वीं शताद्वी का विष्णु-मन्दिर दर्शनीय है ॥
कापरडो (२४६/२५३)--यहाँ का प्राचीन जैन मन्दिर द्रष्टव्य है |
वेजड़लो (२४६/२५३)--यहाँ माताजी का प्राचीन मन्दिर पहाड़ पर बना हुआ है ।

वबाधोरियो (२५२/२५३)--यहाँ पर भी पहाड़ी पर देवी का प्राचीन मन्दिर हैं-।
बड़लु (२५५/२५५)--यह गाँव बड़ला जाति के जाटों ने बस्ताया। भुतेश्वर पहाड़ में देवस्थान है जहाँ नंदावारों सेवा करते है? ।
बीलाड़ो (२५६/२५६)--यह लुनी नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर है।यहाँ शाहजहाँ का लगाया हुआ एक प्राचीन बगोचा (मारा- मोरा) प्रसिद्ध रहा है।यह स्थान सीरवी सम्प्रदाय के लोगों का प्रमुख स्थान है।यहाँ पर संवतु १५२१ में ्ाईजी प्रगटो थी श्रौर तभी से वहाँ अखड ज्योति जलती है।इस सम्प्रदाय का प्रधात आईजी का दीवान है, उसके बड़े महल बने हुए हैं ।दोवान लोग किसी समय में बड़े सम्पन्न

ई
१. बांकीदास री ख्यात: सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १२० ।।
२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम माय) डॉ० ओफा पृ. ३१ ।३ बांकीदात री व्यात: सं० चरोत्तमदास स्वामी, पृ० २०१।।
टिप्पणिये : परगना जोधपुर [&€६
माने जाते थे।उनके वहाँ ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेजों का भी महत्वपूर्ण संग्रह रहा है।*
किसना दुरसावत (आढा) (२६२/२५६)--यह प्रशि्द्ध कवि दुरसा आढा का पुत्र था ।इसे दुरसा के जीवन-काल में ही पर्याप्त ख्याति मिल गई थी ।इसकी स्फुट गीत- रचना भो उपलब्ध होतो है ।
वाली २६२/२६०)-यहाँ प्रारम्भ में पलीवाल ब्राह्मण रहते थे।ये उदयपुर राणा के गुद थे।खेड़ पर अधिकार कर लेने के पश्चात् राठोड़ों ने पलीवालों को हटाकर यहाँ भ्रपना कब्जा कर लिया । राठौड़ों के श्रागमन के पहले जोधपुर के आ्रास-पास पलीवालो की श्रच्छी बस्ती होनी चाहिए क्यों कि यहाँ के अनेक गाँवों में

उन पर बनी छततरिये विद्यमान हैं ।यह उस समय यहाँ की प्रमुख व्यौपारी कौम होनी चाहिए।

सार्नासिंघ अ्षेराजोत सोनियरा (२६८/२६२)--यह _ मालदे के प्रसिद्ध सामंत ग्रखे राज सोनीगरा का पुत्र था और राणा की ओझोर से लड़ता हुआ हल्दीघाटी के युद्ध में काम श्राया था ।

भावद्राजण (२७३/२६५)--यह ग्राम पहाड़ी की ढाल में बसा हुआ है । राव मालदे के समय से यह राठोड़ों के श्रधिकार में आया ।

फोठणो (२९३/२७३)--भारमल जोधावत्त की बेठक यहाँ थी फिर उसका पुत्र जेसिंधदे यहाँ रहता था, पर उससे इस जागीर का बन्दोवस्त नही हुआ तब राव गांगा ने महेवा से ऊहडो को बुलाकर १२ गावों सहित यह जागीर उन्हे दी ।

ही

*बाघावास (२९७/२६३)--चहुवान प्रथुराव के पुत्र वाघ ने यह गाँव बसाया *। बाद में दुर्गादास आसकरणोत के वंशनो की जागीर यहाँ रही ।*

नागाणों (२६६/२६३)--राठौड़ों की कुलदेवी नागणेचियाँजी को मूर्ति यहां पर स्थापित है।

६. राजस्थान में राजस्थानों साहित्य की खोज, (डा३ हरप्रताद शास्त्री) पु० ७०-७६, र।शो सं. जोधपुर ।२. बाँकीदास री ख्यात, पृ० १६३ ।।

१०० ह मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८ मारवाड़ ऐतिहासिक

परिलेख ८

दुदा श्रासिया (३०३/२७६)--इस कवि को बीकानेर के राजा रायसिंध ने: एक हाथी अपने विवाह के अ्वसर पर प्रदान किया था "।

बहुठवी (३०१/२७८५)-ईंदा सरदारों का मुख्य स्थान है| यहाँ के जाग्ीरदार ब राणा की उपाधि थो ।
घटोयाछों (३१०/२८०)--यहाँ पर प्राचीन शिला लेख हैं ।
सेतराबों (११२/२५२)--यहां पर वीरम ने अपने पुत्र देवराज को महाजनों कं बस्ती के साथ बसाया था फिर लुणा का अधिकार यहाँ हुआ श्रौ तत्पश्चात् भाटियों का अधिकार रहा ।
केतू योगादेवां रो वास (३१५/२८४)--यह गोगादे वीरमदेवोत का मुख्य स्थान रहा ।
सेषाछों बडो बास (३१६/२८४)--यहां पर ग्रुसांईजो प्रगटे थे।यहाँ से फिर खिरजाँ में प्रगे bग्रुांईजी की घोड़े पर सवार मूर्ति गोगादे पूजते है ।
देखू (३१८/३८७)--देवराज के पुत्र चाहड़दे के वंशज जेमल धनराज श्रादि स्थायी तौर. पर यहाँ रहने लगे थे ।
झोसियाँ (३१९/२५९)--श्रोसवाल महाजनों को उत्पत्ति यहां से हुई। यह नगर बहुत प्राचीन है।यहाँ पर प्राचोन कलात्मक मन्दिर विद्यमान है तथा कई शिलालेख महत्व के है ।
हरभुसर (२३२/२५९)--अ्रसिद्ध पीर हरभुजी का बसाया हुआ ग्राम ।
लवेरो (३४१/२९३)--महाराजा सूरसिह के प्रसिद्ध प्रधान भाटी गोयन्ददास की जागीर का ग्राम ।
बाबड़ो (३४१/२९३)-यहाँ की बावली में दलथंभन से सम्बन्धित महत्वपूर्य शिलालेख है ।
थेड़ापो (१४६/२६४)--यहाँ रामस्नेही सम्प्रदाय की गद्दी है ।
१. डॉ० टेसोटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण : सं० डॉ० नारांयणतिहु भाटो, रा० शो० सं चोपासनो, जोधपुर ।१. मुरारोदान को दयात, पृ० ३५१ ।।

टिप्पणियों : परगना जोधपुर [१०१
सांदु माला(३४६/२९४)--इस कवि द्वारा रचित 'रायपसिंध री वेलि' श्रसिद्ध काव्य-रचना है।इसमें ४३ छद हैं ।
गाडण चोला (३४९/२९४)--३१ दंदों में रचित 'सुरक्िघ री वेलि' इसकी सुन्दर. काव्य-कृति है ।
महेवा (३५३/२९६)--प्रारम्भ में रावक्र मलीनाथजी की जागीर का स्थान रहा ।राव मेघराज हापावत को संवत् १६४० में मोटाराजा ने यह गांव डिया झौर वह उनके साथ गुजरात चढ़ाई में गया।बाद में मेघराज ने यह जागीर वीरमदे कलावत को दी।संवत् १६६८ में मोटा राजा ने यह दूदा तथा पता को देदी ।महेवा के तीसरे हिस्से के गांव आगे जाकर महेसदास पतावत की जागीर में आये ।संवत् १६९३ में महेवा के गात्र आधो-आध भारमल श्और महेसदास को आपस में बाँट दिये ३
तलबाड़ो (३५६/२६६)-महेवा का प्रसिद्ध ग्राम।यहाँ बहुत बड़ा पशु-मेला लगता है ।३ ५.९
चेड़ (१५९/२९६)--राठोड़ों ने प्रारम्भ में यही पर कब्जा किया था इसीलिये इन्हें चेड़ेचा कहते है ।
परगना सोभत
सोकृत (३८३/१)--सोभत श्रच्छा कस्बा है।प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम. सुद्धघती मिलता है।इसे त्रवावतों नगरी भी कहते थे।यहाँ पर ताॅबे की खान थी । यहाँ को अजवायन तथा महंदी प्रसिद्ध है।राव रिड्मल को सोजत राणा की ओर से दी गई थी पर बाद में राणा का पुन: अधिकार हो गया ।जब राव जोधा ने मण्डोर पर अधिकार करके जोधपुर बसाया तब उसने सोभत पर भी अधिकार कर लिया ।

सोभत नांवे बेटो (३८३/१)--कई ग्रन्थों में इसका नाम सेभल श्रथवा सोजल भी मिलता है ॥ इसका स्थान सोभत में अब भी पूजा जाता है।सोभत
के शाप से त्रंवसेन का राज्य गया तथा हुलों का राज्य यहाँ हुआ अतः उसी समय से इसका नाम सोभृत पड़ा होगा ।
घारणी करणी (३८३/४) - चारण जाति में उत्पन्न देवियों में करणीजी का प्रमुख स्थान है ।ख्यातों के वृत्तांतों से पता लगता है कि राव वीका और कांधलजी को बीकानेर राज्य की स्थापना करने में करणीजी ने बड़ी सहायता पहुँचाई थी।तभी से वीकानेर के राठौड़ इन्हें श्रपती इष्ट देवों मानते हैं।देशनोक गांव में इनका बड़ा भव्य मन्दिर बना हुआ है ।बारहट किशोरसिहजी ने इनका समय वि० सं० १४४४ से १५६९५ माना है।"
राव सता (३०६/५)--मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि राव शराब बहुत पीता था इसलिये राज्य का सारा कार्य-भार रणधीर पर था ॥ इसकी साक्षी का एक गीत अवलोकती य है-- रायांगुर रोद्र कछोघर रावण चेंठक वींद फछोघषर वीर ॥सतो मंडोवर राख न सकियो रावत तो पाखे रिखधीर ।।
हॉगोला री बासण (४२०/४०)--यह गांव हीगोला पीपाड़ा का बसाया हुत्रा होना चाहिए ।
हींगोला पीपाडा (४९३/४२)--यह राठौड पृथीराज का चाकर था। पृथीराज ने इसे एक तलवार वक्सी थी इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा ख्यातों में है ॥
रासदास बेरावत (४२६/४४)--यह बड़ा दानी था।इसकी अखाड़ियाँ राजस्थानी साहित्य की सुन्दर रचना है।

सहेवाज खांच (४३१/४४)--यह अकबर का सेनापत्ति था।राव चन्द्रसेच् जब सिवाने में था तव वीकानेर के राजा रायतिच्च के साथ यह बादशाह की ओर से उस पर चढ़कर आया था ।
१. चारण, श्रण्ड १, अंक ३-४।२. मुरारीदान की स्यात २, पृ० ५६।३. देखें, घुहता नेणसी री सयात भा. २, पृ० १२०१।।
जोधपुर पर मुगलों (हुसैन कुली खान) के कब्जे के बाद, राव चंद्रसेन ने सिवाना को अपना मुख्य ठिकाना बनाकर मुगलों के खिलाफ छापामार युद्ध जारी रखा।
मोटा राजा उदय सिंह ने अकबर के साथ गठबंधन किया और मुगलों की ओर से चंद्रसेन के खिलाफ मारवाड़ में युद्ध लड़ा।कल्ला राठौड़ ने अपना एक दूत मुगल सेनापति के पास भेजकर सन्धि का प्रस्ताव रखा।संधि के चलते कल्ला राठौड़ ने अपने भाई केशवदास, मोहनदास व पृथ्वीराज राठौड़ समेत मुगल फौज के सामने आकर अधीनता स्वीकार की।कल्ला राठौड़ ने इन तीनों को मुगल सेवा में रखवा लिया और स्वयं छुट्टी लेकर वहां से चले गए।
1576 ईसवी में मुगल फौज सिवाना दुर्ग पहुंची, जहां राव चन्द्रसेन ने रावल सुखराज/ रावल मेघराज को तैनात कर रखा था।राव चन्द्रसेन ने फौरन सूजा व देवीदास , गोइंद बोगसा को रावल सुखराज की मदद खातिर भेजा।मुगल फौज ने आसपास के कई गाँवों में लूटमार की।
राजा रायसिंह की एक सैनिक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे गोपालदास ने रावल सुखराज की फौज पर हमला कर दिया।इस लड़ाई में गोइंद बोगसा, सूजा, देवीदास, मान,
दासोत सुजाण , जगनाथ,बरसल जसावत
कांना दिदावत,जैमल

लघे उदावत , चारण हेमो
माणद,हरखो आदि योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए।मान, रावल सुखराज के भाई थे।रावल सुखराज पराजित होकर लौट गए और अपने एक बेटे को मुगल दरबार में भेजकर अधीनता स्वीकार की।राव चन्द्रसेन विपत्तिकाल में मेवाड़ चले गए।महाराणा उदयसिंह ने अपनी पुत्री सूरजदे का विवाह राव चन्द्रसेन से करवाया था।सूरजदे को महाराणा उदयसिंह ने मुडाड नामक गाँव दिया था।राव चन्द्रसेन इसी गांव में ठहरे।

शांध रांस (४६७/४४)--यह राव मालदे का बंड़ा पुत्र था।इसे यह आभास हो गया था कि मालदे के पश्चात् गद्दी उसे नही मिलेगी. ।* श्रतः जब मालदे अधिक बीमार हुआ तो कुछ सरदारो से मिलकर उसने यह घड़यत्र रचा कि मालदे को नजरबन्द कर स्वयं गद्दों पर बेठ जाय ।पर भेद खुलजाने से ऐसा न हो सका और उसे देश छोड़कर जाना पड़ा।वह ऊमादे भटियाणी के पास जाकर रहा।
डीघोड (४६७/४४)--राव राम के परचात् यह स्थान कला के अधिकार में रहा।यहाँ के गुढ़े में रहते हुए उसने मुगलों से मुकाबला किया |"
सोंचोयाई (४६६/४८)--रुयातों में इसका नाम सचियाय मिलता हैं।यहाँ सचियाय माता का स्थान है।यहाँ की पहाड़ियों में (सचियाय री गाल) राव चन्द्रसेन का देहान्त हुआ था *।
भाटी वेणीदात (४७३/४५)--यह भाटों गोयं इदास मानावत का ५ वा पुत्र था ३।
राधा' री बासणी (४७६/४६)--यह गांव १७०६ मे जसवंतात्तह के कुबर पृथ्वी सिंह के जन्म की बधाई के उपलक्ष में ब्राह्मण को दिया गया होगा ।

पांचेटियो (४५३/४७)--यह गांव महाराज गजसिह द्वारा संवत् १६७७ में आढा दुरसा तथा किसना दुरसावत को दिया गया। श्रर्थात् इसके पहले यह गाँव इनके सांसरा में नही था ।
सांकर बाहरेट (४८५४/४७)--"दातर सूर रौ सवाद" इपकी प्रप्तिद्ध रचना है ऐसी प्रसिद्धि है कि बीकानेर के राजा रायसह ने इसे सवा करोड का पुरस्कार दिया था इसके रचे हुए अनेक गीत भौ है ६
बारहट लखा नांदणोत्र (४८५/४७)--यह बड़ा प्रभावशालों व्यक्ति था इसको पहुँच मुगल दरबार तक में थी दुरसा श्राढा जेसे कवियो को भी ऊपर, उठाने और मुगल दरबार तक ले जानें का श्रेय इसे प्राप्त है इसने

१. ऐतिहासिक बात्तां (परम्परा) पृ० ८३ ।
२. वही, पु० ८५५ ।।
है. बांकोदास रो छ्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० ११६ ४. राजस्थानी सबदकास, प्रथम भाग पृ० १३५ ।
ध

१०४ |] मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८
पावृजी की प्रशंसा में सुन्दर काव्य लिखा है, तथा इसकी श्रनेंक स्फुट रचनाएं भी प्राप्त होती हैं ।भाडण केसोशास सांदुवोत (४५६/४७)--महाराजा गजरह ने सं. १६८३ में यह गात्र लाखपसाव में इस कवि को दिया था इस कवि की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त "गज गुणा रूपक बंध" ? नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ मिलता है जिसमें मुख्य रूप से भीम अमरावत के साथ हुए गजसिंह के युद्ध का बडी श्रोजस्त्री शेली में वर्णन किया गया है। "नीसाणी विवेक वार" भी इसकी महत्वपूर्ण कृति है यह भक्त

कवियों में भी अश्रपना स्थान रखता है। रामा सांदु (४५७/४७)--इसने संवत् १६१६ के लगभग उदयसिंह री वेलि नामक सुन्दर साहित्यिक कृति का सर्जन किया।इसकी स्फुट रचनाएँ भी मिलती है १। माधवदास दववाडिया (४५७/४७)--यह प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज का समकालीन था ३। "इसका ग्रन्थ "राम रासो" डिंगल की उत्तम कृतिय "में गिना जाता है ।परगना जेतारण जंतारण (४९२/१)--यह शहर १५२५ में राव जोधा के समय में बसा।यह मारवाड़ का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।जोधा के वंदजों में यह ऊदावत , राठौड़ों का मुख्य परगना रहा है ।इसमें ऊदावतों के बड़े ठिकाने थे तथा यहा के ऊदावत जेतारणिया कहलाये ।रूण (४६२/१)--यह स्थान साँखला राजपूतों का प्रमुख स्थान रहा है। अपने अस्तित्व के लिये सांखलों ने यहाँ रहकर बडे संघर्ष किये हैं।यह नगर पहले सम्पन्न था पर अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुए युद्ध-संघर्ष में नष्ट हो गया ।

१. से सोताराम लालस, प्र: रा प्रा, वि. प्र० जोधपुर।

२. परम्परा, भाग १४ पू ११०।।

३ पृथ्वीराज ने इसके बारे में यह दोहा कहा है-- चूडे चनभुज सेवियो, तत फल लागो तास ।।चारण जीवो चार जुग, सरी न माधघवदास ।।।

टिप्पणियें। परगना तोकत [१०५

ऊदा सुजावत (४९२/१)--यह सूजा की रानी सवरंगदे मांगलियाणी का पुत्र था।इसके वंशज ऊदावत कहलाये ।७ न् गढछणियों (५ १९0 १२)--यह गाँव अखेराज सोनीगरा के वंशज मुकंददास के १६०००) की रेख से पट्ट में रहा १।

लोटी धरी (१५१३/१२)--हाजीखां और राणा उदयसिंह के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मालदे ने हाजीखाँ की सहायता की थी, तत्पश्चात हाजीखां इस गांव
मे ञाकर रहा था।नेणसी की खुयात में लिखा है कि इसी समय जब अकबर ने रुष्ट होकर अपनी फौज उस पर भेजी, तो वह वहाँ से भाग गया
, और फिर जंतारण पर रतनसिह खीवावत से उस फौज की मुठभेड़ हुई*।
मालपुरियो (१२२/१२)--यह गाँव राव मालदे का बसाया हुआ है ।
रतनपुरों (१२३/१२)--यह गाँव प्रसिद्ध वोर राठौड़ रतनसिह खीवावत का बसाया हुआ है ।
पृथ्वीपुरो (१२३/१२)--यह गाँव महाराजा जसवत्तसिंह (प्रथम) के राजकुमार पथ्वोसिह के नाम पर बसाया गया ।
महेतियों (५२७/१२)--यह गाँव भाटी सुरजन झासावत को संवत् १६७४ में जागीर में दिया गया था
हाजीवास (५२७/१२)--यह गाँव सूबेदार हाजोखां के नाम पर बसा होना चाहिए ।
काणुनो (५३६/१२)-यहाँ पर राव चन्द्रसेत ने अपने संकट का समय निकाला था।
लाखावबासणी (५५१/२४)--राठौड़ रतनासह खीवावत ने गांव गछणिया के खेत चारण लाखा दासावत को दान दिये थे, वही पर बस्ती बस गई, जिसका नाम लाखावासणो पड़ा।१. मुरारोदान की छ्घात २ पृ० १०३।२. सम हता नंणसी री स्यात भाग १ पृ० २११।३. मुहता नेणती री स्यात भा. १ पु० ६२।४. मुहता नेणसी री र्पात भा. २ पु० १४६ ।

तेजा री व/सणी (५५१/२४)--चारण तंजा यहाँ वक्ता था, उस्ती के नाम पर इस गाँव का नाम यह पड़ा ।
भांनपुरों,(५५२/२४)--मेर माना का वसाया हुआ गाँव ।
लालपुरों (१५५३/२४)-यह गांव मेर लाला का बसाया हुआ है।
प्रगना फलोधी (भाग २)
फलोधी (१/१)-इसका प्राचीन नाम फलवद्धिका है।इस स्थान पर अनेक शिलालेख' महत्त्व के है, जिनमें कल्याणुरायजी के मन्दिर का शिलालेख वि० सं० १२३६, तथा महाराजा जसवर्न्तात्विह के समय का लेख १६६६ का है, जिसमें मुहरोत नेणसी तथा वहाँ की जनता द्वारा रंगमंडप बनवाये जाने का उल्लेख है।शान्तिनाथ के प्राचीन मन्दिर को दीवार पर महाराजा गजसिह (जोधपुर) के समय के दो ,लेख--घं० १६८६ के हैं, जिनमें उक्त मन्दिर के जीखुॊॉद्धार करवाने का उल्लेख है ।यहां के,गढ़ में भी ५ शिलालेख महत्व के हैं, जिनमें एक शिलालेख सूजा के पुत्र नरा
द्वारा सं० १५३२ में गढ़ की पोल के निर्माण करवाने से सम्बन्धित है।* नरा सुजावत (१/१)-प्राचीन झुयातों में इसका नाम नरसा भी मिलता है ।यह भादियों का भानजा था*। डॉ० ओम ने जोधपुर रॉज्य के इतिहास (भा० २) में इसका पूरा नाम नरसिंह तथा नरसिहदेव लिखा है*। इस ने सातलमेर के जाम से पोकरण की राजधानी वसाई, दुर्ग बनवाया तथा नरासणर तालाब का निर्माण करवाया।इस तालाब पर उसको छतरी बनी हुई है। मुरारीदान की रुयात में लिखा है कि सूजा ने इसे गुजरात के बादशाह की सेवा में भी भेजा था।यह रानी लक्ष्मी का पुत्र था*। जगमाल मालावत (२/२)--यह महेवे के स्वामी मल्लीनाथ का पुत्र था।यह बड़ा वीर योद्धा था।इसके वंशज जो

पोकरण में है, पोकरणा कहलाये I७ हक 3 के लिये देखें--जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाय) डॉ श्रोक्ता पृ० ़ ़ २. बांकीदास री स्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी पृ०८ ll
३. जोधपुर राज्य का इतिहास पु० ४४ I४. मुरारोदान रो रयात २ पु० ६७० I६
टिप्पणियें : परगना फलोधी [१०७
इसके सम्बन्ध में अनेक प्राचीन बातें प्रचलित हैं।राजस्थानी बात साहित्य में 'गशगोर में गीदोली गाई जे तिणरी बात' प्रसिद्ध है l इसका नायक जगमाल है।यह गीडोली महमृद बेगड़े की लड़की थी।बेगड़े' का एक सेनापति हाथीखाँ जगमाल के राज्य में से १४० स्त्रियाँ हरण करके ले गया, जिसके बदले में जगमाल बेगड़े की लड़की गींदोली को उठा लाया फिर युद्ध हुआ, जिसमें बेगड़े की पराजय हुई Iइस युद्ध मे जगमाल ने बड़ा पराक्रम दिखाया, जिसकी साक्षी का यह दोहा बड़ा प्रसिद्ध है--
पग पग लेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल Iबीबी पुछे खान ने, जग केता जगमाल ll
_- गौदोली जगमाल से प्रेम करती थी, इसलिये उसे उसने नही लौठाया'l जगमाल ने एक विवाह सोलंकियों के यहाँ किया था l सोलंकरणी से कभा नाम का बड़ा प्रतापी पुत्र हुआ।उसने जगमाल से हं ब रखने
वाले वीर हेमा को मारा था और इसी द्वन्द युद्ध मे उसकी भी मृत्यु हुई Iसाक्षी का दोहा--
डसे श्रहद जमदुत, मछर छिलंते मेलियो Iकूरभ वाढों कूत, हेमे. वपष सांसर हुवौ ll२ राव हमोर (३/३)-यह नरा का भाई था Iखोचो हृद्दो (६/७)--यह केल्हण का पुत्र था और इसो युद्ध में मारा गया I३

मुंहतो जेघल (७/६)-यह मुहरणोत नेणक्षी का पिता था।जालोर आदि कई स्थानों की हाकमी करने का अवसर इसको मिला।यह जसवतसिहजी के समय में कुछ समय के लिये दीवान भी रहा।
जालावाडी (१४/२८०)--इस स्थान पर जेसिंघ बोरमदेप्रोत की बैठक थी '।$

१. राजध्वात में राजस्थानी साहित्य की खोज (हरप्रत्ाद झास्त्री) घं० डॉ० वारायणसह भोदो रा झो. सं चौगासरी जोधपुर पु० ६० ।मुहरयोत नेणसी री स्यात (भा० २) रा. प्रा. वि. प्र, पृ० २९८।
« सुरारोदान री ेयात २, प० १५६ ।ß बहो पृ० ३५६।
न्ध्ण्ज्फ
श्ण्८ || है मारवाड़ रा परयनां री विगत
वरजांगसर (१८/२५)--यह स्थान खींवा के पिता वरजांग के नाम पर बच्चा!
जांभिठाव (२३/२०)--यह स्थान विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक जांभोजी के नाम पर वसा ।ह
कोछू (२८/२८५)--यहाँ प्रसिद्ध लोक देवता पावृजों धाँथल का देवस्थान है।परगना भेड़ता
मेड़तो (१७/१)--पंस्क्रत लेखादि में इसका प्राचीन नाम मेडतंक मिलता है।मण्डोर के प्रतिहार सामन्त बाउक के वि० सं० ८९४ के लेख मे उसके ८ वें पूर्व पुरुष नागभट्ट का मेडतंक को राजधानी बनाने का उल्लेख है।यहाँ के मन्दिरों आदि में विद्यमान प्राचीन शिलालेखों का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है'।
राजा मानधाता (३७/१)--पौराशणिक युग में यह राठौड़ों का मुल पुरुष माना जाता है।जवनसत राजा के कोई सनन्तान नहीं थी, अत: वह तपस्या के लिये अपनी रानियों सहित तपोवन की ओर चला ।जब वह हरिद्वार पहुँचा, तो गौतम ऋषि ने कृपा कर

उसे वरदान दिया, जिससे उसके एक पुत्र हुआ, उसका नाम उसने मानधाता रखा।यह लड़का बड़ा पराक्रमी हुआ और इसका राज्य बहुत दूर-दूर तक फला।इसने मेहपाठ नामक स्थान को श्रपनी राजधानी वनाया जो वाद में मेड़ता कहलाया ¹। फान्हुड्दे (१७/१)--यह सोनगरा जाति का इतिहास प्रसिद्ध योद्धाजालोर का ह स्वामी था जिसने आलाउद्दीन खिलजो के विरुद्ध बड़ा संघर्ष किया था।इसका विस्तृत वर्णन कवि पद्मनाभ ने डिंगल भाषा में लिखित "कान्हड़दे प्रवन्ध' में बड़े सुन्दर ढंग से किया है।बर्रसिघ, दृदो (१०/२)- श्रोभाजी ने इन्हें जोधा की रानी सोनगरी चम्पा का ही पुत्र माना है।मुरारीदान की ख्यात में इस रानी के पिता का नाम

१. विस्तार के लिये देखें--जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० श्रोका, पृष्ठ ३३-३५ ।
३. राठौड़ वंश री विगत एवं राठौड़ां री बंशावली, सं० घुनि जिनविजयजी, रा. प्रा. वि. प्र, पृष्ठ २-२।
टिप्पणियें : परगना मेड़ता [१०६

खीचा सत्तावत (नारलोर) लिखा है" दूदा ने अपने भाई बरसिंघ के साथ मेड़ता बसाया था और उसके वंशज मेडत्तिये कहलाये। दूद्य का परिचय देते हुए ओमभाजो ने लिखा है कि नरतिघ सीवल के पुत्र को इन्द्रयुद्ध में मारकर दूदा ने महत्वपूर्ण कार्य जोधा के संक्रेत पर किया था 'और इस प्रकार राठौडों का पुराना बेर लिया ¹। नेणसी की ख्यात में लिखा है कि जोधा का राज्य जब मारवाड पर कायम हो गया, तो किसो ने ताना मारा कि नरबद तो नरसिघ की एक स्त्री सुप्यारदे को लाया था पर नरपस्त्विघ के साथी सींचघल लोग बदले में यहां की १४० औरतों को ले गये और फिर बिनय करने पर बइज्जत उन्हें लौटाया, श्रत: तब भी

उनका पासा ऊपर रहा ।इस अपमान का बदला लेने का बीडा दूदा ने उठायाऔ और उसने नरप्िघ के पुत्र मेघा को घेर कर मारा ।
सघालठख (३६/ ५)--नागौर के अ्रास पास के छोटे से इलाके का प्राचीन नाम
सपादलक्ष था, उसी का अपभ्रश सवाब्ठ व हुइ्ला ।यहाँ पहले चौहानों
का राज्य था, इसलिये उन्हें 'सपादलक्षीय नृपत्ति' कहा गया है। ओभाजी ने इस प्रसंग पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि आधुनिक समय
मे उसे सवाजक या इंवाजक कहते है, परन्तु उनका यह मत भ्रामक
लगता है ।वास्तव में उसे श्राजजल सवातछखत या स्वाछश्न ही कहा जाता है।
जायल (३६/ ५)--यह स्थान चौहान राजपूतों को एक शाखा खीचियों का प्रमुख स्थान रहा है ।४ यहाँ के खीची जीदराव का पावूजी के पवाड़ों में उल्लेख आता है, जिसके हाथ से पावूजी राठौड की मृत्यु हुई थी ।
घड़ को (४४/ १५)--यह मुगलों का सेनापति था ।राजस्थानी ख्यातों में इसका नाम घडला मिलता है ।इसके सम्बन्ध में यहाँ किस्सा प्रसिद्ध है*
१ स्नारोदान री हयात, २, पृ० ६६ ।२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २५२ ।३. मुंहता नंणसी री सबात, भाग हे पुणे ३८३ | ४. श्रोका निबन्ध संग्रह (प्रथम भाग) पु० २० की पाद- दिप्पणी ।५. मुहयोत नेणसो री रयात, भा० ३ पृ० १७४ ।४ ६ शोकाजी ने इसे मोर घड़ला लिखा है--

जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २६१ ll
११०
| मारवाड रा परगना री विगत
कि तृतीया का पववे मनाती हुई कुछ लड़कियों को यह उठाकर ले गया था, जिस पर सातल ने उस पर चढ़ाई की lउसके मारे जाने पर तीरों से छिंदा हुआ उसका प्ि र उन लडकियों ने शहर में घुमाया lयह रस्म अब भी मनाई जाती है और घड़े मे छेद करके "उसमे दीपक रखे हुए लडकियाँ घुडला गीत गाती है l
अखेराज भादावत (४६/ २३)--नरासी ने श्रपनी ख्यात में लिखा है कि जब जेमल
मेड़ता को गद्दो पर बठा तो एक बार अखेराज को मालदे के दरवार मे यह इ्राशथ प्रकट करने को भेजा क्रिआप हमें क्यों तग करते है श्राप मेडता सदा के लिए हमे दे दें, हम भी दूधरों की तरह श्रापकी चाकरी करेगे lपरन्तु राव मालदे और उसके सामंतो ने श्रख्तराज के इस निवेबन को हँतो में उडा दिया तब अ्खे राज गुस्से में आकर वहाँ से उठ कर चला आया और मालदे से कहा- हमें 'मेडता कौन दे और हमारे से कौन ले, तुम्हे जिसने जोध्रुर दिया उसीने हमें भी मेडता दिया है l
इसने जंमल की अनेक युद्धों में सहायता की भर मालदे के प्रसिद्ध सामंत पृथ्वीराज को मारा था 'l
पंचार पंचायण (५०/ २३)--यह करमवचंद का पुत्र था lबांकीदास ने इसे मान
*कछवाहा का नाना लिखा है lसवत्‌ १५८६७ में विक्रमादित्य से चित्तौड़ छूटा तब यह काम आ्राया *l मालदे की छोड़ कर यह राणा उदयर्तिह के पास चला गया था lइसको जागीर में जाजपुर था l*

भदो पंचायणोत्त (५२/२६)--ये लोग उत्त समय रडोद के थाने पर थे |वहाँ
से सूचना मिलते ही सहसा की मदद को लिए आये थे |राव वीरमदे को जीवित युद्ध से निकालने वालो में यह भी था |इसने इस युद्ध में बडा पराक्रम दिखाया |उसकी साक्षो का यह दोहा प्रध्विद्ध है--
' सिडते भादिज मांजिया, वीरत राइ विभाड़त ., वीगड़ा वीसरसी नहीं, रींबा वाव्ठो राड़ ३|
१ सुंदरता नेशसी री रझुयात, भाग ३, पु० ११८, १/८, १२१ |२ बां छीदास री रुप, स० नरोत्तमदास स्वामी पु० १४८५ ||
३ ऐजिहासिक वातां : (परम्परा) भा० ११ पृ० ४१ |
टिप्पणियें : परगना सेड़ता- [१११
घोरमदे नं श्रजमेर था ही परो काढियो (५४/२७)-पुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि अजमेर से मिकलने पर जैता को अ्ध्यक्षता में मालदे की फौज ने वीरम का बहु |पीछा किया |अन्त में वोरमदे मारने मरने को तेयार हो गया |युद्ध की स्थिति वनती देख्व जेता ने कहा कि वोरम बडा राजपूत है, इसका इस प्रकार मारता उचित नहीं, यह कभी बडा नाम करेगा |अत: वे लौट आए"|
*
रणथंभोर रो सोबादार (५४/२५)--नेणसी ने श्रपनी ख्यात में लिखा है कि वीरमदे की मुलाकात रणथमभोर के सूबादार से मलारणो के थानेदार ने करवाई १| मुरारीदान की ख्यात में वोरम का मांडव के सूबेदार से
मिलना लिखा है और उसम्तके मारफत शेरशाह से ३
समेत्ठ री नदी रे परे घेढ हुई (१८/३१)--बिगत के प्रथम भाग में इस युद्ध में काम आने वाले कुछ हो वीरो के नाम इस घटना के प्रसंग में दिये गये है |सुरारीदान की रझुयात में ऐसे सरदारों की

न केवल विस्तृत सूची ही मिलती है, अपितु प्रत्येक सरदार के अधीनस्थ योद्धाओरो मे से काम आने वाले योद्धाओ की सख्या भी अकित की गई है।यह सूची निम्न प्रकार
न्ट न्ण0 ७
हैं"-
०
४५. जैमल वीदावत डूगरेत, राठौड़ खींवा ऊदावत का नौकर|
इसी ख्यात में श्रागे लिखा है कि उपरोक्त सरदारों के आदमी व घोड़े वगैरा १००० काम आये तथा राव की (निजी फौज के) २००० आदमी खेत रहे ।
रा० प्रथोराज-जेतावत (१६/३८)-यह प्रसिद्ध वोर जेता का पुत्र था। जैसा
भेरवदासोत ने सिफारिश करके राव मालदे से इसे बगडी का पट्टा दिलवाया *। इसने मालदे के लिये अनेक युद्धों में भाग लिया । मेडता के युद्ध में इसने बडी बहादुरी दिखाई थी, जिसकी साक्षी का दोहा उल्लेखनीय है-- ह
फुछ करंध तेथाह, हुवा नर फेई भक्त ।नं को गहीर ग्रुणेह, पे. सारीखो पीथला ।।
वीदास जेतावत (१५६९/४०)--यह मालदे के प्रप्मिद्ध सामंतों में से था।यह
प्रारम्भ में ऊदावत रतनसिंह खींवावत का सरदार था।इसके बांफा- कुडी ग्राम उस समय पट्टे था।राठौड़ पृथ्वीराज के काम आजाने के बाद राव मालदे उसकी पूर्ति के लिये किसी ऐसे ही वीर की खोज में था, अत: उसने देवीदास का अपने सामतों में स्थान दिया ।इसने हाजीखाँ ओर राणा उदयसिह के बीच जो युद्ध हुए, उसमें हाजीखां की ओर से लड़कर बडी वीरता दिखाई ।

राव ने प्रसन्न होकर इसे बगडी का पट्टा ८० गाँवों सहित दिया। इसके ऊपर राव ने मेडता की सुरक्षा का प्रबन्ध सौया था, जिसे उसने भली भाँति निभाया और अंततः उसके "रक्षार्थ ही काम आया"।

१. घ्
तिहासिक बातां (परम्परा) पु० ४६ ॥3 8! ६ पू० श्र ॥

११४ | मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत
+
इसके वीरोचित कार्यों की प्रशंसा में अ्खा भाणेत ने वीर रसात्मक रचन दिवीदास जेतावत री वेल' डिंगल भाषा में लिखी है"।
ते जसी हगरसियोत (६०/४०)--यह भी अपने समय का बड़ा वीर हुआ।प्राचीन वातों में इसके लिये "असंख ग्बाड़े जेतवादी" विरूद प्रयोग में लिया गया है।इसने - चाटस् के पँवारों को लूट कर अपना बैर लिया था।इसने राव मालदे की ओर से सिवाने की रक्षा का प्रबन्ध भी किया था।इस अवसर पर खर्च के लिये एक लाख फदिया राव ने तेजसी को देना स्वीकारा था, परन्तु हुजदारों ने यह रकम कई दिनों तक नही दी।एक दिन जब राव भोजन कर रहा था और राब का कामदार' श्रभा उससे मिलने को डथ्योढ़ी में जाने लगा, तो तेजसी ने उसे रोक लिया श्ौर कहा--मेरी रकम देकर श्रन्दर जाओ।अश्रभा ने जैसे-तंसे करके पीछा छुडाया और वह मालदे से मिलने अन्दर गया।जब मालते ने उसे विलम्ब से आने का कारण पूछा, तो उसनें तेजसी द्वारा किये गये तकाजे की वात की।राव ने तेजसी को अन्दर वुलवा कर पूछा तो उसने वही तकाजा राव के सामते भी क्रिया।राव ने गुस्से में श्राकर

भोजन,का थाल (सोने का) पटका, तेजसी अपनी रकम की पूर्ति के बदले वह थाल उठा कर अपने डेरे पर चला आया।तब से यह कहावत प्रचलित हुई कि 'बंटाव में थाली तेजसी ली ।
इसने सिरोही को महमुद के आक्रमण से बचाया--माडे राखी महमदे सरणे सिरोही" बाद में राव, .मालदे ने इसे अपनी सेवा से मुक्त कर दिया था, तव यह कुछ समय तक गुजरात के वादशाह की सेवा में भी रहा फिर राणा उदय ्तिह की सेवा में रहा ।गाँव घुलोप इसके पट्टे में था।हाजीखाँ के विरुद्ध यह बहुत वीरता से लड़ा था'। साक्षी का दोहा-- '
काल्याँ तावया भाड़, सीसोयां सेरी करी ।।मांणस ने मेवाड़,
तने ,भव्ठाया तेजती।।
१परम्परा (भा० १४) पु० १०६ ।२ ऐतिहासिक बातां (परम्परा) मा ० १६, ५० ६१-६८।।
टिप्पणियें : परगना भेड़ता [११५
जगमाल (६३/४२)--यह राव वीरम का पुत्र था।यह राव मालदे की चाकरी
करता था।प्रारम्भ में इसे राव ने खेरवा का पट्टा दिया था, फिर श्राधा मेड़ता दिया ।जब अकबर बादशाह ने मेडता पर अधिकार कर लिया, तब यह बादशाह से जा मिला और जब जेमल चित्तौड़ को चला गया तब बादशाह ने फिर आ।ाधा मेडता इसे दे दिया '। इसके वंशज मसूदा के जागीरदार है '।
राव रौ साथ काम श्रायो (६५/४७)--सरफुदीन ने जब मेडता पर चढ़ाई को
तब राव के आसामी ई४ सरदार और राजपूत चाकर ६६ काम झाये ३

वीठलदास जैमलोत (६७/४८)--इसके पट्टे में गाँव
श्राल्हरिशयावास और केकींद
थे फिर यह राणाजो के पआश्रय में चला गया तथा हल्दीघाटी के युद्ध में अपने भाई रामदास के साथ काम आया ।
सादूल जेमलोत (६७/५०)--इसको जेमलजी ने जागीर में कुड़की ग्राम दे रखा
था इसके तीन पुत्र थे-परशुराम, राघोदास और चतुभुज ४
सुरतांण जैमलोत (६९/५४)--यह सोलंकियों का भानजा था जब चित्तौड़ के साके में जेमलजी काम आये, तब वादशाह ने इन्हे शाही सेवा में उपस्थित हो जाने की सूचना राजा मान कछवाहे के मारफत इसके पास भेजी तब सुरतांण ने यह उत्तर दिया कि सकट के समय अभी तो राणा को नही छोड़ेंगे बाद में यह अकबर की सेवा मे उपस्थित हुआ, तब आधा मेड़ता इसे दे दिया गया एक बार मेडता के एवजाने में सोकत भी इसके ,पट्ट में रहा यह जब राजा मानसिह के साथ पूर्व की ओर चढ़ाई मे गया, तब गोकुल में सवत् १६५६ में इसका स्वर्गवास हुआ यह कट्टर राजपूत था।
इसके चरित्र पर निम्न दोहे से प्रकाश पड़ता है--
सुरताण श्रा ुन पतसाह सु , दो वातां न बणेह १
धी दे घरान भोगवा, महृछ न देखण देह ।।
१. मुरारोदान री व्यात, पु० ४५२०-२१ २. वही, पृ० ५२२ ।
३, वही, मा० ३, घु० १६६ ।।
४. मुरारोदाच री ख्यात रे. पृ० ४७० | १. मुरारीदान री व्यात २, पु+ ४६२-६४ ।।

केसोदास (६९/५४)--यह सोलंकियों का भानजा था जैमलजी के काम आने पर यह अकवर के पास उपस्थित हुआ, तब बादशाह ने

इसे आधा मेडता दिया।संवत् १६८४५ में दक्षिण की लड़ाई में गोपालदास सुरताणोत के साथ काम आया ।
जगनाथ गोपालदासोत (७२/६०)--मुरारीदान की ख्यात में इसे राणा प्रताप का दोहीत्र लिखा है।संवत् १६५७ में जब आधा मेड़ता बादशाह नें इससे ले लिया तो नागौर की रूण की पट्टी इसे जागोर में दी।संवत् १६६६ में यह श्रहमदाबाद में काल-कवलित हुआ*।
कानह केसोदासोत (७२/६०)--केसोदास. की मृत्यु के बाद वह आधे मेड़ते का हकदार हुआ ।संवत् १६५८ में दक्षिण में रहते हुए इसका स्वर्गवास हुआ |
इन्द्रभाण (७३/६२)--यह कान्हदास का पुत्र था।इसे बादशाह ने इसके पिता को जगीर न देकर केकीद का पट्टा २२ गाँवों से दिया था ।बाद में यह जागीर भी उससे लेली गई श्रौर जोधपुर के राजा को देदी गई*।
श्रत् (०७३/६३)--इसका पूरा नाम अवुमुहम्मद था।इसके साथ बलू दा के ठाकुर रामदास सूरक्तिघोत ने मुगदड़ा में युद्ध किया था इसका वृत्तांत वियत के प्रथम भाग में श्राया है। इस सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त जानकारी बलू दा ठिकाने की तवारीख में मिली है। उसमें लिखा है कि नंदवारों बोहरों को पक्रड कर श्रबु ले जाने लगा, तो उन्होंने बोलू दा के ठाकुर रामदासजी से फरियाद की, इस पर रामदासजी ने मुगवड़े में आकर लड़ाई की।पंचोली राघोदास बलुओत (जंतारण का अधिकारी) राठौड जैतसिह कछावत (२१ आदमियों सहित) मुगदड़े का ठाकुर तथा माधघवदास दघध्रवाड़िया आदि ५२ आदमी काम आये ।राठौड़ गोपालदास सुदरदासोत (रीयाँ का ठाकुर) के घायल होने का उल्लेख इसमें है

१, मुरारीदान की रस्थात २, पृ० ५६५ ।२. वही, पु० ४७२ ।३. मारवाड़ रा परमनां री विगत, भाग १ पू० ११३ ३
टिप्पणियें : परगना मेडता [११७
रामदास इस युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ा था और उसके काम आने पर उसकी ठकुरानी रभादे उसके पीछे संवत् १६७६, जेठ सुदो ६ की सती हुई, जिसका स्मारक (छत्री) श्रीमालियों की बगीचे में सवत्, १६९४ को जेठ सुदि १३ को बनाया गया ।*
इस प्रसंग पर रामदास और माधवदास दधवाडिया की कर्त्तव्यपरायणतता
को झमर करने वाला एक गीत महाकवि राठौड़ पृथ्वोराज विरचित उपलब्ध हैं। गीत इस प्रकार है--
बड़े एक रजपुत ने एके चारए वडो विहु जां जलम लग होत बाधो। महा गर्जासिह छछ सुर रामो मरे ।
मरे राम सुछ्छ में रसाधो।।। सांसह म्रधरा काम खोसीजती म्रधरां तखो जुहरे धुत्रां मढ़।.. सुर सुत छक जुड़ भरे रण चंद सुत धंद-सुत सुछकछ जुड़ मरे छुत चंद रीति श्रमीज सघ उबे सन्नवां जँत हर ।। रठिया दीन घासक कसतछ पाव शव कमधज तरणी चाड फस्रधज रहै | रहे बिहु चाड दधवाड़ियो रावहारशा पल खड़ खेत जल चाड कुल आपरे | राम सधघकर दिन सार रसिया क्वारी घड़ा चर चद वनाबो करे बीरहर सयंक्रहर स्वर्ग बसोया ।।रं अमर. पक
कान्ह घोंवावत (७५/६७)--यह आ़सोप के ठाकुर खींवकर्ण का पाटवी पुत्र था।यह जोधपुर के महाराजा सूरसिह की सेवा में था। कुंवर

१. विमप्र बचावण कारसे बजे जुझारू ढोल ।चढ घांदा रा पारधी,
बंदी जाय निबोल ।।रामदास जद रांम भज, चढियो तुरकां लार।
तुरकां रा तंडल करे, विषू छुडावश वार।।
२. बलू दा कुबर भवानीसिहजी के सौजन्य से प्राप्त ।
३. शोध विद्यार्थी माधवप्रसाद सोनो के त्तौजन्य पे प्राप्त ।

श्ध्द ||] मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत
गजसिंह के साथ इसने भी खुरंम को सहायतार्थ मेवाड के घेरे में भाग लिया था।1
श्रजमेर में जब किशन तह राठौड आदि ने भाटी गोयंददास 'को मारा, तब इसने किशनपिंह का पक्ष लिया, जिससे राजा सूरप्तिह नाराज हो गये और आमोप का अधिकार इससे लेकर इसके भाई राजधिह को दिया।सुरक्षिह को मृत्यु होने पर यह गजस्निह की सेवा में उपस्थित हुआ ।गजतिंह इसकी कांवर्लियत्त से परिचित था, श्रतः उसने इसे मेडता के प्रवन्ध के' लिये भंड्रारी लुणा के साथ भेजा।1 इसके ७ पुत्र थे, जिनमें से रामचन्द्र महाराजा जसवंतर्सिह को सेवा में कांबुल इलाके के ग्राम सुरखाव में काम झाया ।
पडुखां री वातणी (११८/६२)-यहाँ के एक प्राचीन कुए पर दिलली के सुल्तान अलाउद्दोत खिलजी के समय का वि० सं० १३५८ का एक शिला-लेख है, जिसमें सेडता में उक्त सुल्तान द्वार श्रपता फौजदार नियुक्त किये जाने का उल्लेख है 1 ।
रांघा घारणां री बासणी (११६/९२)-यहाँ का स्थान रामा चारण ने बसाया।[, अतः इसी के नाम पर इस गाँव का नाम पडा ।
क्ेफीदर (१२०/६३)--इसकरा सस्क्ृत लेखों में किस्कन्धा नाम मिलता है यह स्थान मेडता से १४ मील दक्षिण में है।यहाँ ११ वीं शताद्दी का एक शिव मन्दिर है, जिक्षेक समा-मण्डप में ४ शिला-

लेख है।दूसरा मन्दिर पार्श्वनाथ का है, मह मूलत: १३ वीं शताव्दों के आस-पास का बचा हुप्ना है, परन्तु अधिकांश भाग बाद का है जैसा कि महाराजा गजरसिह के समय के एक लेख से प्रतीत होता है ।

भवाद्ध (१२१/ ६३)-यह मेटवा से १२ मील दक्षिण में है।यहाँ महाकाली का

मरारोद!न री हयात २ पु० ४७२ ।।कूपावत राठौड़ों का इतिहात राव शिवनाय, ए० १६२ ।खींजवर ठिकाने की सयात ।।जो पपुर राज्य छा इतिहास (प्रवम नाग) डॉ ओका, पृ० रे३े ५. वही पु० रे४-३५ ।

श्र0

टिप्पणियें : परमना मेड़ता , [११६

प्राचीन मंदिर है, जिसमें ११७१ सवत् का लेख है'। यह ग्राम आस-करण मानभसिघोत मेडतिया की जागीर में था ।

नीलियाँ (१२१/ ६३)--यह ग्र म मेडतिया जेमल के पौत्र विहारीदास वीठल- दासोत को संवत् १६६७ में मिला ३ यहाँ ऊदाजी और वीरम के बीच घोड़ियों के सम्बन्ध मे युद्ध हुआ था।ऊदा ने वीरम की कटार खुलवादी, तबसे मेडतिये कटार नही बाँधते ।

सेहरियो (१२३/ ६३)-यह गाँव जोधपुर के राजा को ओर से स्तवत् १६६६ में कल्याणदास जैमलोत के पुत्र बिहारीदास को मिला और १६६६ में जब्त हुआ । बाद में इस स्थान को सवत् १६६५ में चांपावत केहरखान ने आवबाद किया ।

देहरियो (१२८/ ९६३)-यह गाँव ३ अन्य गाँवों सहित प्रयागदास हरीसिंघोत के पट्ट में था।इसके बाद वीराणी और रलावता उसके पट्टे में रहे ६

रूंदो (१३१/ ६५)--यह गाँव साँवक्क कल्याणदासोत मेडतिया को संवत् १६६४ में सात गाँवों से मिला ¶ बाद में सवत् १६८४ में गोपीनाथ गोकुल- दासोत को मिला ।यह उज्जेन की लडाई में काम आने वाले योद्धाश्रों में से था ऽ।
घुवासपुरों (१३३/ ६५)--शेरशाह के सांमत खवासखों के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।यहां खवासखां को कन्न व उसके महलों के खण्डहर है ।
सिरसलो (१४२/ ६७)-यह गांव संवत् १६६६ में सांवकुदास गोयंददासोत मेडतिया को जागीर मे मिला $।
- जोधपुर राज्य का इतिहाप्त (प्रथम भाग) डॉ० श्रोक्ता १० ३६१ - मुरारोदान री रुपात, २, पृ० ५१५ ।॥ मुरारीदान की रुपात, २ पु० ४८९ ।।वही पू० ४८०-८१ ।॥ फुटकर उ्यात पु० ६६ ।› मरारीदान री स्यात, २, पु० ५४५ ।॥ वही ० ४८३| ।॥ चही ० ४७७ ।€« चहो, २ पु० ५०१ ।।
8 & # उ>द «2६ न धर ७

१२० | सारवाड़ रा परिलेख ८ मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८
राहण (खास) (१५३/ १००)--यह गाँव दृदा ने सीहा को जागीर में देकर मेडता अपने अधिकार में कर लिया था ।रायमल दूदावत के पट्टे मे भी कुछ समय तक रहा फिर सुरताण जेमलोत की ओर से कल्याणदास जेमलोत के पट्टे में रहा ।सवत् १६५७ में ४५ गांवों से उद्देसिघ भगवानदासोत मेडतिया को मिला *।
छापरी बडी (१५६/ १००)--सं० १६७२ में मोहणदापत तेजम्विहोत के पटटे में थी *।
ईडवो (१६७/ १०४)--यह गाँव अर्जुन रायमलोत मेड़तिया के पद्टुटे में था ।जब अजु न चित्तौड़ के युद्ध में राणा की ओर से लड़कर काम आ गया, तो उसके पुत्र नरवद को मिला ।

पालड़ी बड़ो (१०८/१०४)-- चतु भुज मनोहरदाप्रोत मेड़तिया के पट्टे में थी ।
सीरातणो (१०८/१०४)-- संवत् १६६० में १३ गाँवों से हरोज्निह चाँदावत मेड़तिया को जागीर में मिला था ¹।
ड्गरवात्त (१७३/१०४)-- यह गाँव संवत् १६८०३ में ्रमरा रायध्बिघोत मेड़तिया को दो अन्य गाँवो सहित जागीर में मिला १।
फरासत्तपुरो (१७३/१०४)-- इस गाँव का नाम महाराजा जसवंतसिंह के हाकिम मिया फरासत के नाम पर पडा ।
अलतबत्ो (१७६/१०५)-- संवत् १६८३ में रणछोड़ गोपालदासोत को यह गाँव मिला था फिर वनसालीदास बिहारोदासोत को सं० १६८८ में १३ गाँवों से दिया गया ।संवत् १६९६ में महासिह जगनाथोत को दिया गया ४।
१. मरारोदान रो ख्यात २, १५० ५५५, ४७३, ५६१ ३. वही प् ५२३ ।।
हे, बहा प० ५५९ ।।
४. बढ़ी २, प० ४८७ ६ ५ चहो प्र भ४४ड।
६ वही पृ० ५३३१
७, बही पु* डंद8ह, ५६०३ 2 2
टिप्पणियें : परगना मेड्ता [१२१
मदीयांच (१७६/१०५)-- संवत् १६८० मे ३ गाँवों सहित भगवानदास परसरामोत मेड़तिये के पट्टे में था ¹।
भयो बडो (१७७/१०५)-- संवत् १६८० में ५ गाँवों सहित हरीदास गोयंददासोत भेड़तिया को मिला था ।तत्पश्चात् सवत् १६८२ में सबलसिह सेखाउत को मिला ¹। डोभड़ी बड़ी (१७९/२०५)-- संवत् १६०० में यह मनोहरदास सुन्दरदासोत की जागीर मे ४ गाँवों सहित थी ।सवत् १६९० में सिंघ हरोदासोत को मिली ३। रतनती दृदावत (१८५/१०६)-प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मेड़तणी मोरा का

पिता था। यह राणा सांगा की ओर से लड़ता हुआ खजनवा के युद्ध में काम आया।

लसु बडी (१८८/१०७)-संवत् १६८० में उग्रसेन सुन्दरदासोत मेड़तिया को मिली। सं० १६८६ में अजबसिह रामदासोत को ७गाँवों सहित दी गई ३।

ताँबड़ोली (१८६/१०७)--संवत् १ ६८४ में यह ग्राम मुरारीदास गोयंददासोत को ७ गाँवो से जागीर में मिला था *।

रेवंत (१९१)--संवत् १६८० में सुजाणरतिह उग्रसेनोत मेड़तिया के पट्टे में थी ९

रेयां (१९६९/१०६)--माधोदास जैमलोत का वतव था।उसके बाद सुन्दरदास झौर उसके पुत्र गोपालदास की जागीर में रहा।संवत् १७२४ में झाणंदर्सिह भीवसिघोत को मिला ६।

कुडकी (२००/१०६)--भोज सीहावत से छुडवाकर यह ग्राम वीरमदे ने रतनती

दूदावत को दिया था | * यह स्थान मीरॉबाई का जन्म-स्थान माना जाता है।

- मुरारोदान रो हयात, धृ० ५०३ b बही, २, ए० ४३६, * ४१ ।।५ चही, पृ०« ४८६, पद८ | « वही, पृ० ५६१ ।। वही, पु० ५३८ ।« वही, पृ० ५६१ ।।वही पु० ४८३-४८४ ।'। चही, पृ० ५७३-५७४।

डे 8 का मद #% कण (० “०

बज फल उजमम्क अकच्च जा

१२२] मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत

लाडपुरो (२०२/१०६)--सं० १६६७ में यह ग्राम हरीराम कलाउत को मिला | संवत् १६७१ में उसका पुत्र रामचन्द्र अधिकारी हुआ '।

केरियो (२०४/१०६)-- रामचन्द्र रघुनाथोत को संवत् १ ६७५ में मिला था ।नरसिघवासणो (२११/१०६)--नरसिंघदास रायमलोत मेड़तिया की बसताई हुई ।
प्रगना सिवाना | सीवाणो (२१६/१)--सीवाने का गढ़ वीरनारायए पंवार द्वारा बनवाया हुशा माना जाता है।ख्यातों में इसे कूंभटा भी कहा गया है।मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि यह किला सिंह-लंका होने से कड़तोड़ियल (जिसकी कटि टूटी हुई है) माना जाता है, अतः यह राजधानो बनाते योग्य नहीं है। यहाँ पर कोई भी शासक पन्प नही सकता ।
तीडो छाडावबत (२१६/२)--इसकी उपलब्धियों पर लिखा हुआ एक प्राचीर्च
गीत इस प्रकार है-- रु पिड़ सांचोर सोनगिर पासे।सीहाहरं चढे. रिण. सोक ।।मातंगपुर मर कटक सरावे।सूंह भजाइई गयो मछरीक ११।।पीतभपुर हुंता. प्रह गांजे भिड़ सेन वढ़ियों वंक भाव ।खाडा बछ जीतो खेड़ेचे।राव जाछोरों रिखणताछ र।।फ छोडवियो भमछरी छाडावत ।।समुणतस घरणा ग्रहे फमाण ।भागो राव राठौड़ भिड़ंते चोरंग. साँचतती चहुवाण ।।।। रे
जेतमाल सलखावत (२१६/३)--यह सलखा की पडिहारी रानी (राणा रूपडा की लड़की) का पुत्र था।इसके १२ पुत्र थे।इनमें से खीवकर्ण बडा प्रतापी हुआ ।इसने अपने पुत्रों को मृत्यु के समय यह निर्देश दिया ३. मुरारोदान रो व्यात २, पृ० ५२५ ।।
२. वहीं, पु० ६३० ।।३. पही, पु० ५४ ।
टिप्पणियें परगना सिवाना [!१२३
कि सिवाना हापा के अधिकार में रहने देना और तुम सभी विदेशों में अपने-अपने ठिकाने कायम करना ।इसके वंशज जेतमालोत कहलाये ।

रायमल मालदेश्रोत (२१६९/७)--यह मालदे की भाली रानी हीरांदे का पुत्र था।संवत् १६२७ में बादशाह अकबर जब नागौर आश्राया, तब मोठाराजा उदयसिह के साथ यह भी बादशाह से मिला।इसे शाही नौकरी में रख लिया गयां।इसके ४५ पुत्र थे-कल्याण्दास, प्रतापसी, कान्ह, बलभद्र तथा सांवलदास १।
राजा रायपिघ भुरटियों (२१ ९/८)-बीकानेर का प्रसिद्ध शासक था।इसका नाम भुरटिया कैसे पड़ा, इसका बड़ा चिलचस्प किस्सा है।मुगलों की ओर से फरमान लेकर जो अहदी वगरह शाते थे, उन्हें मरुप्रदेश का लंबा रास्ता पार करना होता था।रास्ते में कांटेदार भरूठ घास बहुत होने से यात्रा कष्टदायक होती थी, फिर बीकानेर पहुँचने पर उनकी झावभगत न होकर उपेक्षा-सी होती थी, इसलिये उन लोगों ने राजा के नाम के साथ "भरूटियों' शद्व कहना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार यह " नाम प्रचलित हो गया ।
थोभ बडोबास (२३६/१६)--यह प्राचीन नगर है।किसी समय में यहाँ जे नियों की अच्छी बस्ती थी।इस स्थान पर लिपिबद्ध अनेक जेन-मग्रन्थ उपलब्ध होते हैं ।
घुरपुरो (२४१/१६)--महाराजा सूरसिह के राज्य-काल में बसा, इसलिये इसका यह नाम पड़ा ।
बालोतरो (२४६/१६)--यह बड़ा गाँव लूनी नदो के पास बसा हुआ है तथा यहाँ की जमीन सरसब्ज है !
पचपदरों (२४७/१६)--नमक की खानों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध है।यहाँ नमक को खानों पर पुश्तेनी तौर से कार्य करने वाले खारवालों की बड़ी बस्ती है ।
१. बांकोदास री ज्यात, पृ० ५।२. वही, पृ० १६।

१२४ | मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत

गोपड़ी (२४८/१६)--यहाँ रावछ मलीनावजो का प्राचीन स्थान है।

सेवाई (२४८/२१)--पह ग्राम सं० १६७६ में सोनगरा भावरसी जव्षवबंतोत के पट्ट में आया ।

पाटोधो (२५०/१६)--मारवाड़ में बढ़िया नइल की धोड़ियों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध रहा हैं।यह राठोड महेसदास मालदेश्रोत को पढ़े में भिला था ।

गुधरदट (२५५/१६)-हेमा सीमालोत के साथ जगमाल की जब अनबन हो गई, तो यहाँ के पहाड़ो पर रह कर हेमा ने महेवा की धरतो में खुब नुकसान किया था ३ विखे के समय मालदे भी यहाँ कुछ समय तक रहा ।

भाईली (२९२/१६)--ताइलो नामक पहाड़ी के पास वसा हुआ होने से इसका यह नाम पड़ा ।परगना पोहकरणशा

पोहकरण (२८९/१)-यह स्थान पुष्कर ऋर्षि द्वारा वस्ताया हुम्रा माना जाता है।पूरा परगना मरुस्थलो है, पर जहां पोकरण शहर वस्ता है, वहाँ पानी की कमी नहीं है।जैसलमेर को- सीमा पर होने के कारण इस स्थान का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ जैसलमेर वालों का भी अधिकार रह चुका है।उनके द्वारा किले में करवाये हुए कार्य तथा याचकों को सांसण में दिये हुए गाँवो का उल्लेख इसके स्पष्ट प्रमाण हैं।यहाँ पर वसने वाले राठौड़ पोकरणा राठोड़ कहलाते है ।

रंमदे पीर (२९१/५)--मारवाड़ के प्रसिद्ध पाँच्च पीरों में इनका स्थान है।रामदे ने जनता के कष्ट निवारणार्थ अनेक कार्य किये थे, जिसके कारण! आ्राज दिन भी राजस्थान और गुजरात के लोग उनमें श्रद्धा रखते हैं, तथा बहुत दूर-दूर से मनौती के लिए

लोग आते है।संत हरजी भाटी की लिखी " रांमदे री वेल** में इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है।बसे

२. सुरारोदान री उपात, २, पृ० २५६ |
२ वही, पृ० २५२ ll
३. समुहता नंखसी री ज्यात भा० २, पृ० ३०८८।४. परसभुपरा भा० १४ पु० ६०५१
टिप्पणियें : परगना पोहकरण [१२४
इनके गीत मेघवाल जाति में अत्यधिक प्रचलिन हैं ।
नरे आपरो श्राँण फेरी (२६२/६)-मुहता नेणसो ने अपनी ख्यात में इस प्रसंग का बड़ा दिलचस्प किस्सा लिखा है।पोकरण पर खोवा का अधिकार था और नरा फलोची पर शास्तन कर रहा था।एक दिन जब नरा ग्रपनी माँ लक्ष्मीवाई के पाप्त वेठा भोजन कर रहा था, तो पोकरण पर विजली चमकती हुई दिखाई दी।लक्ष्मीबाई ने उस ओर देख कर नि श्वास लिया।नरा ने इसका कारण-पूछा तो श्रधिक श्राग्रह करनें पर उसने बताया कि खीवा ने किस तरह निदात्मक भाव से किसी समय उसके साथ शादो करने के प्रस्ताव को ठुकरा कर एक कूंत्रारी लड़की का प्रपमान किया था। इस पर नरा ने इसका बेर लेने का नि श्चय किया श्रोर अपने पुरोहित को गुप्तचर के तौर पर पोकरण भेजा ।उसने कई दिनों तक वहाँ रहकर सारो स्थिति का पता लगाया और एफ दिन खोवा को अनुपस्थिति में उपयुक्त अवसर समझकर नरा को सुचना दी, जिससे नरा ने आकार सहज हो में गढ़ पर अधिकार कर लिया*।
नरो बाहर चढियों (२६२/६)--वारह वर्ष बाद नरा से बेर लेने के लिये खीवा झौर उसका पुत्र लूका अपने सैनिकों सहित पोकरण पर चढ आए और वहाँ की गायों को घेर कर ले गये।नरा ने उनका

पोछा क्रिया और पोकरण से ५ कोस दूर नादरहाई ग्राम के पास युद्ध हुआ, जिसमे लू का के हाथ से नरा, कोम आया |वहाँ एक जाल के पास उत्तका सिर कट कर पड़ा १।

पोकरण रा दुय बांद किया (२६९३/७)--खीचा के वंशज गोयंद के राज्य में बरा- बर लूट-पाट करते रहे, जिससे तंग आकर उमने लू का को ३० गाँवों का बंट दिया३ और जिस जाल के पास नरा का सिर कट कर गिरा था,

वहाँ सीमा कायम करदी |लू का ने अपनी राजधानी भुणियाणा ग्राम मे कायम को ।

१ मुहणोत नेखसी री स्थात, भा० ३ पु० १०३-१२ |२. चही, पृ० ११४ ||
३. घही ।

१२६ || सारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत

राव बरआंग (३११/३)--यह पोकरण का शासक और खींवा का पिता था|

बाठनावजजी (३२६/३)--खींवा के शासन-काल में यहाँ यह योगी रहता था फिर वह रुष्ट होकर वहाँ से चला गया |जाते समय उप्तने शाप दिया, जिससे खोदा को राज्य खोना पड़ा १ है|

देढीयां रो वास (३३०/३६)--यहाँ बसने वाले राठौड़ दोढिया राठौड़ कहलाये |चांदसमों (३३५/३६)-यहाँ के राठौड़ चांदसमेचा कहलाये ।

ढंढ री सरेह (३३६/३६)--डढ पडिहार अड़वाल का खुदवाया हुआ यहाँ तालाव है, अतः उसीके पीछे इस गाँव का यह नाम पुकारा जाता है|*

साकडो (३४०/४०)- यह पोकरण के प्रसिद्ध गाँवों में से है।भूमितल में अब भी पानी ८-१० पुरक्त पर खूब उपलब्ध होता है ।
पड़िहार राणो रूपड़ो (१४३/४०)--यह रूपड़ा मारवाड़ी गीतों में गाया जाता. है।इसके १२ पुत्रिये थी।इसने प्रण कर रखा था कि वारह ही लडक्रियाँ वह रावों (राव को पदवी वालों) को व्याहेगा।११ लड़कियाँ तो उसने रावों को व्याह दी पर १५वीं के लिये वर न मिलने पर उसने भाटी राव केलण को व्याही ।तब से केलणों और पड़िहारो के सम्बन्ध होने लगे ,३
भुणियांगो (३४४/४१)--लू का धोकरणा पोकरश के श्रावे गाँव ३० की ठझ्ुराई हां रहकर करता था ।इसके खड्हरों से ज्ञात होता है कि बह गाँव प्राचीन समय में सम्पन्त था।
बाभश (३४६/४५)--यहां के राठौड़ बांमणुवा कहलाये ।रांमदेहरो (३४६/४२)--रानदेवजो ने जब्र पोकरण हमोर जगमालोत को दे दो, तव वे य. आकर रहे ।यह पोकरण का महत्वपुर्ण स्थान है क्यो कि
१. मुहसोत नेणसा री ख्यात ३, पृ० १०७ ll
२. यह अ्डबाल कोई प्रसिद्द व्यक्ति होना चाहिए।सालोड़ी ग्राम के पास अड़वाल नामक बड़ा पहाड़ है।संभव है, इसी के नाम पर इस पहाड़ का नाम भी रखा गया हो १
३. मुरारीदान की स्यत् ३ १० १७५ ll
रे
टिप्पणियें : परगना पोहकरण [१२७
वर्ष में दो बार यहां रामदे पीर का मेला लगता है, जिसमे लाखों लोग झ्ाते है ।
सह जीवरण रौ वास (३५१/४३)--महडू जीवण ने पोकरणों और गोयंदोतों का बेरभाव प्रयत्न करके संमाप्त करवाया, तब

पोकरणों ने उसे यहाँ जमीन दी ।उसको बसी का यही नाम पड गया ।
रतनू रूपसी रो बास (३५२/४३)--यह ग्र म रतनु' रूपसी को जैसलमेर के रावत
भीव द्वारा उस समय दिया गया जब पोकरण जेसलमेर के अ्धिकार मैं थी।
महुडदः घोदा रो बास (१५२/४३)-यह ग्राम जेसलमेर के रावत मनोहरदास द्वारा महुडः षीदा को संवत् १६८८ में दिया गया।यहाँ पर म्हडू खीदा की बसी थी इसलिये उक्त स्थान का नाम यह पड़ा ।
रतनु भारमसल रो बास (३५३/४३)-इस स्थान का श्रन्य नाम कीलांणपुर शायद जेसलमेर के रावछ कल्याणादास के नाम पर पड़ा हो ।कल्याणमल ने यह गाँव रतनू भारमल को दत्त में दिया तब पोकरण के श्रधिकारियों ने आकर शासक के आ्रादेशानुसतार इसकी सीमा निश्चित करदी ।श्रतः इससे ज्ञात होता है कि पूरा ग्राम दत्त मे न देनूर उसका कुछ भाग ही उक्त चारण को दिया गया होगा और उसकी बसी उक्त नाम से प्रसिद्ध हुई'।
नांदरशाहाई रो बास (३४४/४३)--यह ग्राम लू का के पुत्रों द्वारा चारण लूभा और सादा मेघावत को दिया गया।इससे पता चलता है कि कभी-
कभी शासक के पुत्रों द्वारा सामूहिक रूप से भी ग्राम दत्त मे दिये जाते थे।
गाँव केलावो आ्रावो (१५१/४३)--यह ग्राम राव गोयंद नरावत द्वारा चारण नाल्ूहा को इस उपकार के बदले में दिया गया कि जब षीवा बरजांगोत गाये घेर कर लेजाने लगा तब नरा उसके पीछे

बाहर चढा और नरा ने युद्ध करके वीरगति श्राप्त की परन्तु उसके बहुत से साथी बुरी तरह घायल हुए, इनकी सेवा सुश्र् सा चारण नालल्ुहा ने खूब भ्रच्छी तरह की ।
ड्ध्घध| सारवाड़ रा परगर्ना री विगत
केलावा ग्राम उस समय सुना पडा था उसका आधा हिस्सा उक्त चारण को और आधा भाटी वीरम जोबावत को दिया गया तभी से इसके दो वास अलग-अलरूग वसे|
बाकी २४५ गाँव मांडरा (३५५/४३)-लेखक ने पोक रण के पूरे गाँवों की विगत प्रत्तुत न करके ६९ गांवों को ही विगत प्रस्तुत की है। संभवत: उसने यह विगत पोकरण परगने को हाकिमों करते समय तैयार की? परन्तु शीत्र ही उसका स्थानान्तरण हो जाने से इसे वह पूरी नह्दों कर पाया ।
भर

उमन्न्‌मम» »>_०ं०+->» मन्‌मममकय
१, द्रष्टव्य--मारवाड रा परगना री विभत भा० २ पृ० ३०५-६॥
विगत में प्रयुक्त विशिष्ट शद्वों का अर्थ
. भअडांरशी--रहन रखना
झफीश--अफीम पर कर| श्र रपी-> फौज की टुकडी, फौज का एक भाग ।
झमीन--मुगल साम्रज्य का बडा राजस्व भ्रधिकारी जिसको पशुघन आदि सम्पत्ति' कुड़क
करके भी वसूली करने का श्रधिकार होता था ।
अनड़--वड़ा पहाड, ऐसा पहाड़ जो किसी के कब्जे मे न आ सके ।
भझरट--रहट ।
अ्वल ऊनालौ--प्रथम दर्ज की रवी की फसल|
असुष--वैमनस्य, मनमुटाव|

अहधी--वह मुगल राज्य-कर्मचारी जो विशेष सदेश लेकर राजा आदि के यहां पहुंचता था ।आंख दांश--शासक के नाम की दुहाई।
आईठांश--निशान, शेष चिन्ह ।
खआाषा--अक्षत ।
आझाषारिया--वह कुआ जिसमे से एक बार पानी निकालने के बाद कुछ समय के लिये ठहर
कर पानी निकाला जा सकता है।
आध बंटाई--जमीन की पैदावार का आधा हिस्सा बाद कर लगान स्वरूप लेना ।आररं--रणस्थल, युद्ध भूमि ।
आझावदांन--आवाद ।
श्रोठो --सुतर सवार, ऊंट पर चढ़ कर सदेश ले" जाने वाला व्यक्ति ।
झोढ़ी ठौड़--विकट जगह ।के
श्ोलगरणा--प्रेमिका, गायिका ।
ओऔनाड़--किसी के वन्धन मे न आने वाला ।वीर प्रकृति का पुरुष।
इजाफो--अधिक, अतिरिक्त)
उछाह--उत्सव, किसी विशेष उपलब्धि के निमित्त प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए किया
जाने वाला आयोजन ।
उदक-- चारण अथवा ब्राह्मण आदि को जमीन आदि दान मे देने का सकल्प ।उधरांरो--पहले की सालो का उधार (बकाया) रहा हुआ कर ।ऊतन--वतन, जन्म स्थान।
ऊनवा--वह स्थल जहा आसपास का पानी बह कर भर जाता है गेहूं चने श्रादि की फसल होती है ।ऊनाली--रबी की फसल ।
और सूखने पर उसमे

१३०] मारवाड़ ऐतिहासिक परिलेख ८
ऊरी ताली---हलल्की ताली, वह खलिहान जिसमें बहुत कम या नही के वराबर अनाज "निकला हो ।
एका--भाटियों की एक शाखा |
कंवलू-पुजा--देवी भ्रथवा महादेव की तुष्टि हेतु शीश समर्पण करके पूजा करना ।
कड़ब घास- पशुओं के लिए विशेष प्रकार की घास पर लगान।
कदकर--फौज ।
करपएवारिया--वह अधिकारी जो गांव की सीमा मे खेतों तथा वृक्षों आदि की रखवाली
करता है।
कमठौ - भवन-निर्माण कार्य (दुर्ग महल आदि बनवाने का कार्य।
कमेत घोड़ो--गहरे तम्बादु रंग का घोडा।
करवरे बरस--फप्तल के हिसार से हल्का वर्ष
कांकड़--सीमा ।
कांठे-- किनारे पर, सीमा पर।
कु वरपदौ--राजा भ्रथवा ठाकुर के जीतेजी समाज में उसके कुवर के लिये मान्य पद, जिसके श्रधीन उसे कुछ श्रधिकार प्राप्त होते थे।
कुकाऊ--पुकार करने वाला व्यक्ति जो किसी संकट की सूचना देने पहुंता था ।
कुमया--वैर भाव।
कोरत-थंम--कितती-स्तंभ ।
कीरोड़ी--करोड़ रुपये तक की वसूली करने का अधिकार रखने वाला राजस्व अधिकारी ।

कोसीटा--वह कु ग्रा जिसका पानी ज्यादा गहराई पर न हो और हाथी की सूड के ग्राकार
के चरस (सू डिया) से पानी निकाला जाता है।
कोहर--गहरा कुआ |
घरड़ो--उस व्यक्ति से वसूल किया जाने वाला कर जो गांव मे घर वसा कर रहता था ।
घडच्चर लोग--जानवर चराने वाले लोग |
घडोरशा--वह जमीन जो वोई जाती हो ।
घरक कुरशा--वायव्य उत्तर और पश्चिम के बीच की दिशा।
घांचाजगी--कगड़ा, युद्ध
घारचिया--विशेष किस्म के गेहूँ जो सावारण खारे पाने से पकाये जाते हैं ।
घाटो--जीती हुई, कब्जे मे की हुई ।
घारोल--इनका पेशा नमक बनाना रहा है | मारवाड मे जहां नमक की खाने है वहां प्रायः
ये पाये जाते है।ये शाक्त मत को मानते हैं।
पालसे--वह भूमि जो किसी जागीरदार के अधिकार में नही है ।
घासी दोढ़ी---उस महल का मुख्य द्वार जहा शासक वि'श्राम करता था।
घिजमत--नौकरी, सेवा ।
घोचड़ौ--मृत्यु-मोज पर लिया जाने वाला कर।।
ई
शद्वार्थ ह [१३१
घोहलू--गोद, पुत्र के श्रभाव मे अपने गोत्र के नजदीक रिश्तेदार के लड़के को दत्तक पुत्र बनाना ।
गढ़ री रांग--किले की नीव ।

गलत कोढ़--गलित कुष्ठ।
गांवेती--गाव मे बसने वाले लोग ।
ग्रासी बेध--जीवन यापन के लिये जमीन प्राप्त करने को किया जाने वाला संधर्ष।
गुढ़ो--पहाड आदि मे रहने का सुरक्षित स्थान ।
गुमट--गु वजदार स्मारक ।
सूघरी--कु झं पर वधे हुए रुप मे निश्चित माप में लिया जाने वाला लगान।*
गोढ़वाड़--पाली व कुछ जालोर परगने का इलका।
गोसवारो- सार रुप मे हिसाव।
गोरां--कन्ने ।
गोवली--गवाले ।
गोरवौ--गांव के नजदीक का" वह स्थान जहा गायें इआदि रखी जाती है।
घांरी--तेल या सरसो की घाणी निकालने वालो से लिया जाने वाला कर|
घासमारी--पशुओ की गिनती के अनुसार उन पर लिया जाने वाला कर ।
घीश्ाई--जिसके घर मे गायें भैसें होती थी उससे घी के रुप मे लिया जाने वाला कर ।
घृघरी--फसल मे से लिया जाने वाला (कर के तैर पर) विशेष हिस्सा।
चंवरी-- चौरी विवाह की विधिवत रश्म सम्पन्न करने के लिये जहा वर वधू को वैठाकर
ब्राह्मण द्वारा मंत्र आदि बोले जाते हैं ।
चक--जमीन का एक बड़ा हिस्सा ।

चांच--साधारण कच्चा कु आ, जिसमे से पानी निकालने के लिये एक लवे लट्टे के पीछे पत्थर बांध कर अगले हिस्से मे बरतन लटका कर हाथो से उसको ऊपर नीचे करने पर पानी निकाला जा सकता है।
चोढो--कम पानी ।
चोतरो--परगने का मुख्य स्थान जहां परगने का हाकिम या बड़ा अधिकारी रहता था।
चोरासी-- चौरासी गांवो का समूह ।
छुतीस पवन जात--प्राचीन ग्र थो मे इनके नाम इस प्रकार है--
सीसगर, दरजी, तवोली, रंखाल, गवाल, वाढेई, सिणगतरा, सु तेली, घोवी, घूनिया, कदोई, कहार, काछी, कुलाल, कलाल, माली,
कु दीगर, कागदी, किसान, पटवूनिया, चतेरा, वे रेवारी, लषेरा, ठठेरा, राजपटवा, छपरवध, नाई, भरभूनिया, सोनार, लोहार, सकलीगर, हवाइगर, धीवर, चमार,-ऐ छतीस पवनीया |
ऊ+
छाली-- बकरी छोरू--वशज | छोकरा | बड़े आदमी के अधीन व्यक्ति ।

१३२ | मारवाड़ रा परिलेख ८ री विभत
जमीयत- जमा सामान ।
जात--जाति धर्म-लाभ के निमित्त की जाने वाली किप्ती स्थान की यात्रा ।
जाव--% ए के पास की वह भूमि जिसमे सिंचाई करके फसल ली जाती है।
जुआरो--फसल के सिट्टो की कटाई प्रारंभ करते समय लिया जाने वाला कर।

जीव सिलं--युद्ध के समय अगों की रक्षा के लिए पहिना जाने वासा लोहे का अंग-बारा ।
टीकायत--राज्यतिलक का अधिकारी, बड़ा लड़का ।
टोको--राज्य-रोहरा के दस्तुर की रहम, जिसके अनुसार ललाट पर तिलक किया जाता है।मगनी का प्रस्ताव | मगनी के प्रस्ताव के समय किया जाने वाला त्तिलक।
ठरड़ो--कठोर जमीन ।
डाक चौकी---राज्य की डाक आगे पहुंचाने के लिये नियत चौकी ।
डायजो--दहेज प्रचीन प्रथानुसार कपड़े व गहनो के अतिरिक्त हाथी घोडे, दास - दासियां
पुरोहित व अन्य नौकर आदि भी दहेज में दिये जाते थे।इन्हें दायजवाल कहा
- जाता था।
डावड़ा--लड़का ।
डोलौ--वह रूम जिसके अनुसार लडकी को शादी के लिये उसके (होने वाले) पति के घर अथवा निद्ि चत स्थान पर पहुचाया जाता था।
डोहली-ब्राह्मण, साधु, भाट श्रादि को दी गई दान की भूमि ।
ढ़ ढ--वह नीचा स्थल जहां स्वतः पानी शामिल हो जाता हो ।
द ीमड़ा--एक प्रकार का कुआ |
ढोचा--छापामार हमले ।
तहवारो--विज्येप श्रवसरों पर दी जाने वाली लाग।
तलहटी--पहाड़ी आदि पर बने दुर्ग के नीचे का स्थान ।
तला--गहरा कुआ ।
तकिया--सन्यासी के समाधि-स्थल पर वना चबूतरा |
तागीर-- जब्त ।

तागीरात--जागीरदार से गांव जब्त होने पर लिए जाने वाला कर |
ताती बाहर--शीघ्रता से, उसी घड़ी चढ़ने वाली बाहर ।
ताली--खलिहान बुहारा जाता है उस समय लिया जाने वाला कर ।।
तीरबा--तीर की मार पहुचे उतनी दूरी।
तुरकांरा राज--मुसलिम राज्य ।
थडो--सम्माननीय व्यक्ति का स्मारका ।
लु--रेतीली भूमि स्थल। ऑरो--वह स्थल अथवा दुर्ग, कोटड़ी आदि जहा राज्य की ओर से सुरक्षात्मक प्रवन्ध के लिए सिपाही आदि रखे जाते हैं थांरोदार--थानेदार, परगने की सुरक्षा का जिम्मा रखते वाला अधिकारी।
शद्वार्थ [१३३
दत्त-दान में दिया हुआ गाव या भूमि ।
दरगाहु--मुगल दरवार, वह स्थान जहा वादशाह बैठकर आदेश देता है।
दहब--दैव ।
दांरा-- विसाती (मनिहारा) आदि से माल का अनुमान करके एक साथ लिया जाने वाला कर द्राव-पशु ।
दांती--सिट्ट काटने के लिये दांत (काटने का औजार) लेकर जाने पर कर।
परसंग - सम्बन्ध। रिश्तेदारी ।
परकोटो - शहरपना ।
पढी---जमीन का चक विशेष ।
.पलीवाल--पाली के मूल निवासी होने से पलीवाल कहलाये ये लोग उदयपुर के राणा के गुरु रहे हैं और किसी समय मे व्यौपार आदि भी करते थे तथा सम्पन्न थे।

पगवाय--वह वावली जिसमे सीढ़ियों के द्वारा उतर कर पानी भरा जा सकता है।
पटेल - एक खेतीहर जाति ।
पसायता--निम्न जाति के लोगों को दिये गये खत जो राजा की सेवा-टहल करते थे।जैसे नाई, दर्जी, ढोली, कुम्हा आदि, इनसे कोई कर नही लिया जाता था।
परधांन - राज्य का प्रधान मत्री, प्रमुख अधिकारी, प्रमुख प्रतिनिधि (देखो-प्रथम भाग की भूमिका)
प्रतसही -प्रति सैकड़ा ।
प्रवाड़ा--वीरता पूर्ण कार्य ।
पाही--जागीरदार को कुछ चाकरी देकर उसकी एवज में खेत बोना ।
पायगा - अस्तवल ।
पाठा कागल---राजस्व आदि का हिसाव लिखने के लिये खर्च होने वाली लेखन-सामग्री के निमित लिया जाने वाला कर।
पालेज दूध रा-दूघ पर रोकड़ पैसों मे लिया जाने वाले कर।मुफ्त में आये हुय जानवरों
पर लिया जाने वाला कर।
पातसाही मारग--शाही मार्ग ।वह मार्ग जिसेसे होकर शाही सामान जाता हो ।
पारका घाड़ा--बहुत दुरं तक लूट पाट करना, लुटेरों को भी लूट लेना।
पानचराई - ऊटो की चाराई के निमित्त लिया जाने वाला कर ।
पितर--पित्र योनि ।
पोरोजो--एक मुगल कालीन छोटा सिक्का ।

पोछ रो बेरो--वह कुइना जिसमें से केवल पीने के लिये पानी निकाला जाता है।
पीयल--वह फसल जो सिंचाई द्वारा होती है ।
पुकारु--पुकार करने वाले, फरियादी ।
पेडो-यात्रा।
पेटवाशों--केवल पीने लायक पानी।

१३४ | मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत
पेसकसी - सरकार को दी जाने वाली वेगार आदि, चाकरी ।
पेटियों - घर के नौकरो को निर्वाह के लिये दी जाने वाली खाने-पं निश्चित सामग्री ।
पोतरा--पौत्र, वशज ।
पोल रा चाकर--राज्य विशेष की रक्षा नियुक्त नौकर ।
फदिया - मुगल समय का सिक्का विशेष ।
फलसो--ग्राम का मुख्य द्वारा, मकान श्रादि को रक्षित करने के लिये वनाईं गई वाड़ या दीवार का मुख्य द्वार ।
दाबे--वदले में ।
द्राहु-गहरा गद्ठा जिसमे वर्षा का पानी कई दिनों तक रहता है।
दीवांस--उदयपुर के राणा की पदवी (राज्य का प्रमुख राजस्व अधिकारी (देखो प्रथम
भाग की भूमिका १० १४)
दीवांनगी --मुगल राज्य-व्यवस्था मे सबसे बड़े राजस्व अधिकारी का पद, देखो दीवाण।
दीवांश खाँनों--वह स्थान जहाँ दीवान अपना दरबार लगता है।
दुकालू--श्रकाल (दूसरे वर्ष फिर पड़ने वाला श्रकाल |
दुगाणी--मुगल कालीन छोटा सिक्का ।
देवचो--देवता के आगे वचन-निर्वाह की शपथ ग्रहण करना ।

देहरो--मदिर ।
देसोत--देशपति, राजा ।
दोढ़ी--राजा के निजी निवास स्थान का मुख्य द्वार ।
दोत पुजा--दवात-पृजा के निमित्त लिया जाने वाला लगान।
दोहीता--दुह्ति का लड़का, दोहित्र।
देसोटो--देश निकाला, किसी व्यक्ति द्वारा वड़ा अपराध किये जाने पर उसे देश से वहार चले जाने की सजा ।
दौस--दोयम, दूसरे दर्ज की जमीन ।
धरणो-- चारणो श्रादि की जागीर जब्त करने पर अथवा किसी अधिकार को समाप्त करने पर उनके द्वारा सम्बन्धित शासक के द्वारा या जागीर के_मुख्य स्थान पर असंतोप व्यक्त करने के लिये घरना देकर बैठना|
घरमदुश्लार--वर्मद्वार| युद्ध के समय चारों ओर से घिर जाने पर प्राणों की भिक्षा मांगकर
निकलने वालो के लिये कहा जाता था कि वे वर्मद्वार से निकले ।
धुमालो--कर विशेष ।
धोंकल्ू--भगड़ा, फिसाद ।
धोराबंध खेत--वह खेत जिसके किनारे पर रेत को पाल वात्र कर पानी खेत में रोका
जाता है।नंदवाणा बोहरा--वोहरों की एक शाखा| नटघ४--नट आदि जातियें ।
शद्वार्थ' [१३७
नालू--संकरा कुआ|
नालू-वि श्षेप प्रकार की तोपे
नाल-बंदी--कर विशेष ।

लालू र--तालियर ।नालियर का फल भेज कर लडकी की मगनी का प्रस्ताव किसी योग्य व्यक्ति को भेजने का रिवाज राजस्थान में रहा है।नालियर का लौट जाना दोनो पक्षो के लिये अपमान-जनक समझा जाता था।
पंडब--घोडो का सेवक|
पांतया--पक्तिवद्ध करके अतिथियों को भोजन कराने की व्यवस्था ।
फारकती--कुल हिसाब का निपटारा|
बड़ी नेपे--खूब उपज।
बंधवों कोहर--वह कुआ जो अन्दर से पत्थर आदि द्वारा पक्का वंधा हुआ होता है।
बधारा--किसी की सेवा को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से उसकी जागीरी में विस्तार करने के लिये अतिरिक्त गाव या जमीन आदि देना।
बरसोंदियो--वह तलाव जिसमे वर्ष भर के लिये पानी रहता है।
बरठो - मैसा |हु
बसीटाला - वीच बचाव करने वाले| सदेश वाहक ।
बापोती--पुरखो द्वारा अधिकृत स्थान- राज्य, जमीन आदि ।
बाब--रेशमी कपड़ा व किनार गोटे आादि पर लिया जाने वाला कर।
बावसु--गुप्त रूप से खबर लाने वाला व्यक्ति।
बाहर--चोर अथवा डाकू का पीछा करने का कार्य।प्राचीन समय में गायो की बाहर के लिये चढना बड़ा पुण्य-कार्य समझा जाता था।
बित-गायें आदि पशु-धन।

बिशनोई - इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक पंवार राजपूत जाभाजी थे। इनके अनुयायी जाटों को इन्होने २९ (बीस तथा नो) प्रकार के नियमों का पालन करवाया, इसलिये यह विश्नोई कहलाये। इनका मुख्य पेशा खेती करना रहा है।
बीछाहीव--विसाती ।
बेठ - जागी रदार अथवा शासक द्वारा वेगार मे लिया जाने वाला कार्य अथवा वस्तु ।
बोह सींबो - वडी सीमा वाला।
भरोती--कर भरने के पश्चात रसीद करते समय लिया जाने वाला कर।
भरेत रा षेत - वह खेत जिनमे वर्षा का पानी भर जाता हो।
भांरेज - मानजा, वहिन का लड़का।
भाई बांटे--सम्पत्ति को भाईयो में वांटने की क्रिया।वह सम्पत्ति जो भाइयो में बांदी जाने पर किसी एक भाई को प्राप्त होती है ।भाखर री घुड़--पहाड़ की मोडदार ढाल।भाखर री गाल - दो पहाडो के वीच का सकरा गहरा स्थान ।

१३६। मारवाड़ रा परिलेख ८ री विगत
भाषरी री षांभ - पहाड़ी की मोड में ।भु जाई--भुना हुआ खाना ।बड़े ठाकुर अथवा शासक के यहां नोकरो तथा श्राने जाने वाले लोगों के लिये तैयार किया जाने वाला पुष्टिदायक भोजन ।
भोग - राज्य द्वारा जमीन की उपज से लिया जाने वाला लगान।
भोगलावे - खेत को इस हिसाव से रहन रखना कि उसके पेटे ली गई रकम का व्याज खेत के मालिक को नही देना पढ़ता और

खेत का कोई लगान वह रकम देने वाले से वसूल नहीं कर सकता।
भोगप्तील--भोगिशैल ऐसी किवदती है कि यहा सर्प वहुत अधिक मात्रा में पाये जाते ये इस लिये इस शैल का यह नाम पड़ा।
भोमिया--शासक से जिसे चौकसी रखने के लिये जमीन मिली हो वह व्यक्ति।
सांशो - वारह मन के वरावर का माप।
सापो--गांव से खरीद कर जो चीज वाहर ले जाई जाती थी उस पर यह कर लगता था।
मिलणो--भेंट के निमित्त (सम्मान स्वरूप) लिया जाने वाला लगांत।
मिरजो--उच्च मुगल अविकारी को मिलने वाली एक उपाधि।
सुकाती --रुपयो के रूप मे प्राप्त होने वाला जमीन का लगान।
सुसला - मुसलमान लोग है
मुहम--सेनिक अभियान।
सुक - एक दिशा का नाम।
मेर--मारवाड़ की एक प्राचीन जाति।
मेहरेलरण - महि को रेलने वाला द्रव्य-दान द्वारा समस्त लोगो को तुष्ट करने वाला।
रसत - फौज की खुराक के लिये लिया जाने वाला लगाने।।
राजलोग - राजा के परिवार के लोग।
रातीबाहो - रात के समय किया जाने वाला हमला।
राह वेधी--हरएक समस्या की उलभतों को वारीकी से समभने वाला भविष्य की गति विधि का सही अनुमान लगा लेने वाला।
रिरा - अनउपजाऊ भूमि, वह भूमि जहां खारा पानी शामिल होता हो।

रोड़ी - छोटी पहाड़ी, पठार ।
रेल--दूर से वहकर श्राने वाला पानी जो खेतों में फेल जाता हो ।
रंत-प्रजा | र
लिखावरी - हिसाव किताव लिखने के पारिश्रमिक स्वरूप लिया जाने वाला लगान।
लूण रो दरीबो - नमक की पैदावार का स्थान ।
बडो रजपुत-प्रसिद्ध राजपूत ।अनेक गुणों से सम्पन्न अपने समय का जाना-माना वीर राजपूत | वरणी--रुई की खेती ।बदावरणो--वन्दना करना |
+
नामानुक्रमरिकाएँ : पुरुष व स्त्री नामानुक्रमरिकाएं
श्र
अंबाल श्रीमाली व्यास २५७
अंवो मालावत भाटी ६४
अकतयार खान १७६ ' कवर पातसाह ६९, ७१, ७६, ७७, ५७, ८८, ६७, १६३, ३८६, ३९०, ४६५, ४६६, दो. ६८५, ७३, २६७ अखा बारहट ७६ अखीया 7 सोढावत सीढायचा चारण दो. ३५१
पखैराज आसकरनोत जैतमाल राठौड़ श्पोढ खैराज ऊर्देश्तिघोत